thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : ११६ ● अंक : ३५ ● १६ सितम्बर, २०१४ आश्विन कृष्ण अष्टमी सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

बम्बई में आर्य समाज और देव दयानन्द

ठाकुर महेश सिंह

महर्षि का सुधार संबंधी कार्यक्रम सर्वांग सम्पन्न होकर जनता के सामने आ रहा था। स्वामी जी ने अपने कर्म को वैष्णव सम्प्रदाय के खण्डन से प्रारम्भ किया था, और उन का खण्डनास्त्र सारे पौराणिक मतों पर व्याद गया। ये सुधार की दूसरी दशा थी। ज्यों ज्यों वैदिक धर्म का रूप अन्य मतों की अपेक्षा उज्ज्वल रूप में दिखाई देने लगा, त्यों त्यों अन्य सब धर्माचार्य अपनी रक्षा के लिए चेष्टा करने लगे, इसी में स्वामी जी का मौलवियों और पादरियों से भी संघर्ष उत्पन्न हो गया। स्वामी जी ने सब मतों और सम्प्रदायों का खण्डन कर वैदिक धर्म में स्थापित करने का निश्चय किया।

स्वामी जी ने ईसाइयत और इस्लाम का जब खण्डन प्रारम्भ किया तब इस बात के दो निमित्त बताये जा सकते हैं एक तो ये कि स्वामी जी उस समय तक की आर्य जाति पर इन दो मतों से उत्पन्न होने वाले खतरे को देख रहे थे, स्वामी जी ने देखा कि हिन्दुओं को ईसाई और मुसलमान कलंकित कर रहे हैं आर्य जाति जिसे दुर्भाग्य से हिन्दू जाति का नाम दिया गया था पादरियों और मौलवियों के दावों के सामने डाँवाडोल हो रही थी, तब स्वामी जी आर्य जाति के रक्षक बने और ईसाईयत और इस्लाम की बाढ़ को रोकने का यत्न करने लगे।

एक दूसरे प्रकार से भी इसी बात को समझा जा सकता है, स्वामी जी मनुष्य मात्र के हितैषी थे। वे चाहते थे कि हिन्दू हो या बौद्ध, ईसाई हो या मुसलमान, भारतवासी हो या विदेशी मनुष्य मात्र वैदिक धर्म को ही स्वीकार करें। अन्य धर्मावलम्बियों को धर्म सम्बंधी भ्रांतियों में से निकालने के लिए ही स्वामी जी ने खण्डन का कार्य आरम्भ किया, परंतु खण्डन का उद्देश्य आर्य जाति की रक्षा करना नहीं था, अपितु अन्य मतवादियों का खण्डन ही था। स्वामी जी को सामान्य रूप से मनुष्य मात्र से प्रेम था परंतु आर्य जाति से विशेष प्रेम था, उस प्रेम का केवल ये कारण नहीं था कि वे आर्य जाति में उत्पन्न हुए थे, ये भी कारण थे कि वे आर्य जातियों को सब जातियों की अपेक्षा सत्य के अधिक समीप समझते थे। वेद धर्म का स्रोत है केवल आर्य जाति ही है जो वेदों को प्रमाणिक मानती है जिन आर्ष ग्रंथों में स्वामी जी वेद के आशय को ढूँढते थे उनका खजाना भी आर्य जाति के पास ही था, वैदिक स्तर पर वैदिक ज्ञान वैदिक धर्म इन सबके अवशेष यदि कहीं थे तो आर्य जाति के ही अन्दर में, इस कारण स्पष्ट है कि जहां आर्य जाति को शुद्ध वैदिक धर्म पर लाने के लिए केवल सुधार की आवश्यकता थी, वहां इस्लाम और ईसाइयत का मूल सहित परिवर्तन किये बिना वैदिक धर्म के लिए स्थान नहीं निकला जा सकता? एक जगह केवल काट छाँट चाहिए दूसरी जगह पूरा परिवर्तन आवश्यक है, आर्य जाति की रक्षा और सुधार दोनों ही आवश्यक थे परंतु अन्य मतवादों का रूप परिवर्तन भी अभीष्ट था। स्वामी जी ने आर्य जाति की रक्षा और सुधार करते हुए ईसाईयत और इस्लाम को रास्ते में खड़ा पाया, ये धर्म आर्य जाति की सत्ता को समाप्त करने की धमकी दे रहे थे। आर्य जाति को सुधार कर इसे वैदिक धर्म बनाकर स्वामी जी इसे संसार की भलाई का साधन बनाना चाहते थे। आर्य जाति के लिए भयानक समझ कर आर्य जाति के रक्षक ने ईसाइयत और इस्लाम पर प्रत्याक्रमण किए, इससे मनुष्य मात्र का भला ही अभीष्ट था। प्रथम तो स्वामी जी समझते थे कि आर्य जाति के विचारों का पूरा सुधार तो 23 करोड़ (उस वक्त की जनसंख्या जिसमें पाकिस्तान भी शामिल था) से अधिक वैदिक धर्मी सारे संसार को सच्चे धर्म की शरण में ला सकते हैं। वे देखते है कि आर्य जाति के अधूरे वैदिक धर्मी अन्ध प्रथा में आकर बिल्कुल अवैदिक और अनार्य बन रहे है। मनुष्य जाति की भलाई इसी में थी कि आर्य जाति अपने रूप को समझ कर शुद्ध धर्म का प्रकाश देखें।

दूसरे स्वामी जी चाहते थे कि अपने अपने मतों की दुर्बलताएं देखकर ईसाई व मुसलमान आदि वैदिक धर्म के प्रकाश में आ सकें। स्वामी जी का आर्य जाति के प्रति पक्षपात था परंतु वह गुणों का पक्षपात था। भारवि कवि ने कहा है - वीतस्पृहाणामपि मुक्ति आत्मा भवन्ति भव्येषु पक्षपाताः।

स्वामी जी आर्य जाति को अपना बिगड़ा हुआ किला समझते थे और अन्य धर्मावलम्बियों को उस किले पर आक्रमण करने वाले प्रतिपक्षी थे विचार समय के साथ धीरे धीरे पूर्णता को प्राप्त हुआ, जिस समय का वर्णन मैं कर रहा हूँ उस समय स्वामी जी रक्षा सुधार और प्रत्याक्रमण के पूरे कार्यक्रमों को तैयार कर चुके थे, वे इस समय युद्ध की गहराई में थे, सब प्रतिस्पर्धी चौकन्ने हो चुके थे और स्वामी जी से खीझे हुए

क्रमशः.....4 पर

वेदामृतम्

न त्वावाँन२ऽ अन्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते।
अश्वायन्तो मघवभिन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे।।

अर्थ– हे (मघवन्) परमपूजितैश्वर्यवाले (इन्द्र) सब दुःखों का विदारण करने वाले ईश्वर! (वाजिनः) वेगवान् (गव्यतः) गौ=वाणी का उपदेश करने वाले और (अश्वायन्तः) अपने अश्व की इच्छा करने वाले हम लोग (त्वा) तेरी (हवामहे) स्तुति करते हैं। क्योंकि कोई (अन्यः) दूसरा पदार्थ (न) (त्वावान्) तेरे सदृश (दिव्यः) शुद्ध है (न पार्थिवः) न पृथिवी में प्रसिद्ध है (न जातः) न उत्पन्न हुआ है (न जनिष्यते) न उत्पन्न होगा, अतः आप ही हमारे उपास्य देव हो।।

भावार्थ– परमेश्वर के सदृश न कोई शुद्ध है, न कोई उत्पन्न हुआ है और न उत्पन्न होगा और न वर्तमान है इसलिये ही सब मनुष्य इसको छोड़कर अन्य किसी की उपासना इसके स्थान में न करें। इसी कर्म को इस लोक और परलोक में आनन्ददायक समझें।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

आचार्य स्वदेश
प्रधान/संरक्षक

भुवन तिवारी
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन अपरिहार्य

हमारे देश की स्वतंत्रता प्राप्ति का 67वाँ वर्ष चल रहा है। परतुं स्वतंत्रता का सुख देश को नहीं मिल रहा। स्वतंत्रता का अर्थ देश का सर्वांगीण विकास सुचरित नागरिक, जन-जन में पूर्ण अनुशासन, सबका राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पण आदि है। परंतु खेद है कि सर्वांगीण विकास की योजनाएं तो घोषित होती हैं परंतु वह विकास कागजों में अधिक जमीनी स्तर पर नहीं के बराबर हो रहा है। आज देश में मनमानी भाषणबाजी, बयानबाजी की भरमार हो रही है। वे वक्ता इसी में स्वतंत्रता मान रहे है। देशवासियों का चारित्रिक स्तर उत्तरोत्तर गिरावट की ओर है। सरकारी कार्यालयों में कार्यालयकर्मी काम को टालने में अपना हित समझते, नागरिक येन केन प्रकारेण अपने कार्य की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील होते हैं। विद्यालयों में अध्यापक बच्चों को पढ़ाने में मन न लगाकर उन्हें होमवर्क देकर अपने कार्य की इति श्री मानते हैं। अर्थात् नीचे से ऊपर तक सभी क्षेत्रों में केवल स्वार्थपरता प्रभावी है। इसका क्या कारण है इस पर सरकार एवं समस्त प्रबुद्धवर्ग को चिन्तन करना चाहिए।

हमारा राष्ट्र महाभारत काल से पूर्व तक सभी तरह से समृद्ध, सोने की चिड़िया कहा जाता था। विश्व का गुरू माना जाता था। विज्ञान चरमोत्कर्ष पर था। महाभारत काल से ही गिरावट प्रारम्भ हुई। जब शिक्षा की विधा में कुछ परिवर्तन हुआ। पहले गुरूकुलों में राजा और रंक के बच्चे एक साथ आचार्यो के नियंत्रण में अनुशासनबद्ध जीवन जीकर शिक्षा प्राप्त करते थे उनमें ऊँच नीच का भाव पनपता ही नहीं था। महाभारत काल में जब गुरूजन राजा के बच्चों को पढ़ाने उनके महलों में जाने लगे तो पहला बीज ऊँच नीच, राजा रंक, गरीब रईस का अंकुरित होने लगा। शिक्षा व्यवस्था चरमराने लगी। फिर भी वेदाधारित शिक्षा होने के कारण पूर्ण ह्रास नहीं होने पाया था। धीरे धीरे वेदाधारित शिक्षा के स्थान पर पुराण आधारित शिक्षा चली। हमारे देश की समृद्धि को देखकर पहले यवन लुटेरों ने आकर देश की संपदा लूटी। हमारे पुराणाधारित शिक्षा वाले पंडितों ने पलायन वाद का पाठ पढ़ाकर देश को लुटने दिया। यवन हमारे शासक बने। यवनों के बाद अंग्रेज आक्रान्ताओं ने हमारे देश को व्यापारी बनकर आकर लूटा। हमें सदा गुलाम रखने की भावना से हमारी शिक्षा व्यवस्था में पूर्ण परिवर्तन कर डाला। लार्ड मैकाले ने उस व्यवस्था का सृजन किया। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था के सृजन के बाद अपने देशवासियों को सगर्व सूचित किया कि अब इस देश के लोग सदैव ही हमारे गुलाम रहेंगे। वे सदा रोजी रोटी की व्यवस्था में ही उलझे रहेंगे। स्वाधीनता की सोच के लिए फुर्सत ही न रहेगी।

हमारे कुछ पूर्वजों को इससे कुछ पीड़ा हुई व उस से छुटकारा पाने के उपाय खोजने लगे। राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर आदि विचारक इसमें प्रमुख थे। वे सती प्रथा आदि कुप्रथाओं को समाप्त कराने में सफल हुये परंतु अंग्रेजियत से पृथक सोच नहीं बन रही थी। सौभाग्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती का अभ्युदय हुआ। उन्होने देश की दुर्दशा का सर्वांगीण चिन्तन किया और सभी विकारों के विनाश के लिए मुहिम छेड़ दी। नारी प्रताड़ित थी उसे सही प्रतिष्ठा दिलाने, जातिवाद ऊँचनीच के भेद को जड़ से मिटाने, धर्म के स्थान पर फैलते पाखण्ड को समाप्त करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की और उसे आन्दोलन का नाम दिया। कहा कि मैं कोई मत या सम्प्रदाय नहीं ब्रह्मा से जैमिनि ऋषि पर्यन्त प्रतिपादित सत्य सनातन वैदिक धर्म की पूर्ण स्थापना के लिए यह आन्दोलन चला रहा हूँ। यह आन्दोलन कभी शिथिल नहीं होना चाहिए। आन्दोलन तीव्र गति से चलाने के लिए गुरूकुल व विद्यालय खोले गये। स्वराज्य आन्दोलन में 80 प्रतिशत आर्य सदस्यों ने भाग लेकर अपना सर्वस्य अर्पण कर देश को स्वतंत्र कराया।

देश स्वतंत्र हुआ अपनी सरकार बनी अपना संविधान बना जिसमें महर्षि दयानन्द के सभी मन्तव्यों को प्रच्छन्न रूप में समाहित किया गया। सत्ता में आने वाले नेताओं ने देश की भौतिक समृद्धि में ही अपना सारा ध्यान केन्द्रित कर लिया। महर्षि दयानन्द द्वारा संस्तुत वैदिक शिक्षा व्यवस्था पर ध्यान नहीं दिया। फलतः भौतिक उन्नति तो होने लगी परन्तु चारित्रिक ह्रास उत्तरोत्तर होने लगा। आज सर्वत्र भ्रष्टाचार, अनाचार, बलात्कार, झूठ-फरेब का साम्राज्य फैल रहा है। पिता पुत्र की एवं पुत्र पिता की धन की पिपासा में हत्यायें कर रहे हैं। नारी उत्पीड़न चरम पर है। तथाकथित धर्मगुरू अपना वैभव बढ़ाने में पाखण्ड को बढ़ाने में लगे हैं। सत्य धर्म के स्वरूप को बताने में रूचि नहीं ले रहे हैं। परंतु आर्य समाज इन सबसे अपना मुख मोड बैठा है। आन्दोलन शिथिल है। हाँ धनार्जन के लोभ में आर्य समाज में भी अनेकों विवाद गहराने लगे हैं। हमारे घर के झगड़े अदालतों में जाने लगे हैं। यह सब हमारे लिए देश की आजादी के लिए हमारे स्वत्व की रक्षा के लिए खतरे की घण्टी है। अस्तु।

मेरा देश के सभी आर्यजनों से विनम्र अनुरोध है कि वे आलस्य और प्रमाद छोड़कर सर्वात्मना आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने का संकल्प ले। सरकार पर विदेशी शिक्षा व्यवस्था को अविलम्ब बदल कर वैदिक शिक्षा पद्धति लागू कराने का दबाव बनाये। सभी स्कूलों व कालेजों में त्वरित रूप में नैतिक शिक्षा प्रारम्भ कराने पर बल दें। आर्य समाज के देश में हजारों विद्यालय व कालेज है जो सरकारी सहायता की प्राप्ति के मोह में आबद्ध उसी विदेशी शिक्षा को दिलाने में संलग्न हैं। हम सरकारी धन का मोह त्याग कर तत्काल प्रभाव से अपने विद्यालयों में नैतिक शिक्षा अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाना प्रारम्भ कर दें। निश्चय ही यदि हमने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को बदलने की सशक्त मुहिम चलायी तो सरकार शिक्षा व्यवस्था को अवश्य ही संवारने के लिए सजग होगी। शिक्षा में सुधार होगा फिर हमारा चरित्र बल बढ़ेगा। हम में देश प्रेम, देशभक्ति पल्लवित होगी। राष्ट्र समृद्ध होगा। विश्व में हमारा गौरव बढ़ेगा। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष सार्थक होगा।

सम्पादक

नशा छोड़े घर जोड़े

नशा नाश। नशा ऐसी बीमारी है जो हमें, हमारे समाज को हमारे देश को तेजी से निगलती जा रही है। आज शहर और गाँवों में पढ़ने, खेलने की उम्र में स्कूल और कालेज के बच्चे एवं युवावर्ग मादक पदार्थो के बाहुपाश में जकड़ते जा रहे हैं।

इस बुराई के कुछ हद तक जिम्मेदार हम लोग भी हैं। हम अपने काम धंघों में इतना उलझ गए हैं कि हमें फुर्सत ही नहीं है, ये जानने की कि हमारा बच्चा कहाँ जा रहा है, क्या कर रहा है, कोई परवाह नहीं, बस बच्चों की मांगे पूरी करना ही अपनी जिम्मेदारी समझ बैठे हैं।

क्यों करते हैं लोग नशा?

कभी शौक के नाम पर तो कभी दोस्ती की आड़ में, कभी दुनिया के दुखों का बहाना करके तो कभी कोई मजबूरी बताकर, कभी टेंशन तो कभी बोरियत दूर करने के लिए लोग शराब, सिगरेट, तम्बाकू आदि अनेक प्रकार के मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं। लेकिन नशा कब उनकी जिंदगी का हिस्सा बन जाता है उन्हें पता ही नहीं चलता, जब पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

नशे से नुकसान

हिंसा, बलात्कार, चोरी, आत्महत्या आदि अनेक अपराधों के पीछे नशा एक बहुत बड़ी वजह है। शराब पीकर गाड़ी चलाते हुए एक्सीडेंट करना, शादीशुदा व्यक्तियों द्वारा नशे में अपनी पत्नी से मारपीट करना आम बात है। मुँह गले व फेफड़ों का कैंसर, ब्लड-प्रेशर, अल्सर, यकृत रोग, अवसाद एवं अन्य रोगों का मुख्य कारण विभिन्न प्रकार का नशा है।

उपचार- नशा छोड़ने के लिए निम्न उपाय करें

डायरी बनाये- नशा कब और कितनी मात्रा में लेते हैं लिखें।

विचार करें- आपके लिए आपका परिवार, बच्चे, कैरियर और स्वास्थ्य कितनी अहमियत रखता है। आपके नशा करने से इन चीजों पर कितना असर पड़ रहा है।

नशा छोड़ने से आपको क्या फायदे और क्या नुकसान होंगे एवं यदि आप नशा जारी रखते है तो आपके भविष्य पर क्या असर होगा, गंभीरता से विचार करें।

पॉजिटिव रहें अपने आपको खेलकूद, किताबें पढ़ना, फिल्म देखना एवं गाने सुनना जैसी गतिविधियों में व्यस्त रखें, अकेले ना रहें। यदि इतने उपाय करने के बाद भी आप नशा छोड़ने में सफल नहीं हो पा रहे है तो किसी नशा मुक्ति केन्द्र से राय लेना बेहतर होगा।

गौरक्षा के लिए विशाल धरना प्रदर्शन

दिनांक 2 अक्टूबर 2014 को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक स्थान-जन्तर मन्तर दिल्ली में अखिल भारतीय राजार्य सभा के तत्वावधान में आयोजित विशाल धरना प्रदर्शन में सभी गोभक्तों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में दिल्ली पहुँचे। हमारी मांगे है-

1. गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये।
2. गौ हत्या पर पूर्णतः प्रतिबंध हो।
3. गौ वंश संरक्षण, संवर्धन, अनुसंधान, पंचगव्य औषधि निर्माण, जैविक खाद, कीटनाशक, गोबर गैस आदि योजनाओं के लिए सरकारी सुविधा उपलब्ध हो। तभी गौ वंश का उत्थान सम्भव है।

संयोजक समिति

रघुराज शास्त्री	महेन्द्र सिंह आर्य	डा. रामकुमार आर्य
कानपुर	दिल्ली	09412450229

आनन्द स्वामी स्वामी ओमानन्द सरस्वती

1- अखिल भारतीय आर्य सभा
2- अखिल भारतीय विद्यार्य सभा
3- अखिल भारतीय धर्मार्थ सभा

thearyasamaj.org

मैना देवी जिसे रोने की भी आज्ञा न मिली

डा. अशोक आर्य

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में जब कानपुर के बिठूर दुर्ग को अंग्रेजी सेना के आक्रमण स्वरूप चौथी टुकड़ी ने घेर कर भयंकर आक्रमण कर दिया, 1857 के इस स्वाधीनता संग्राम का मुख्य सेनापति नाना घोंधू पंत अंग्रेजी सेना का मुकाबला करते हुए इतना कमजोर हो चुका था कि यदि वह एक क्षण भी वहां से भागने में देर कर देता तो निश्चित रूप से पकडा जाता और यह अवसर इस स्वाधीनता संग्राम को तत्काल पराजय में बदल देता, ऐसे में नाना जी का वहां से तत्काल भाग निकलना आवश्यक हो गया था। भागने की इस हड़बडाहट में वह अपनी पुत्री मैना देवी को साथ लेने का अवसर भी उन्हें न मिला, वह जानते थे कि एक मैना नहीं अपितु अनेक मैनाओं की रक्षा का दायित्व विधाता ने उनके कंधों पर डाल रखा है। अतः वह बिठूर को छोड़कर भाग निकले।

सेनापति हे कि नेतृत्व में तोपों का मुंह नाना के महलों की ओर था तथा अंग्रेजी गोलों की गड़गडाहट के साथ ही महल खण्डहरों में बदलते जा रहे थे। इसी मध्य वीर बालिका मैना गिरते हुए महल के एक कोने से निकलकर तोप के मुँह के सामने आ छाती तान कर खड़ी हो गई। उसका परिवार उससे बिछुड़ चुका था तथा महल के खण्डहर बनने से वह बेहद पीड़ा अनुभव कर रही थी। जब उससे पूछा गया कि तुम कौन हो तो वीर बाला ने बेझिझक उत्तर दिया कि क्या तुम मुझे नहीं पहचानते, मैं आपकी बेटी की सहेली व सहपाठी मैना हूँ। आप भी हमारे महलों में आया ही करते थे। सेनापति हे ने उसे पहचानते हुए कहा कि "मुझे तुम पर दया आती है और अपनी पुत्री की याद से और भी दया आती है। खेद है कि वह विद्रोहियों के हाथों मारी गयी। इस पर मैना ने भी दुख प्रकट करते हुए कहा कि आपका अपराधी तो नाना साहब है यह महल तो नहीं, इसे मत तोड़िये। कर्नल हे ने कहा कि मैं अपने सेनापति का आदेश मानने के लिए विवश हूँ।

अब तक महल का एक बड़ा भाग ध्वस्त हो चुका था। मैना को इससे बहुत प्रेम था, वह इसे देख कर सिसक सिसक कर रो रही थी। वह पत्थरों को चूम कर जोर से विलाप करते हुए रो रही थी कि इतने में ही जनरल अउटरम आ गया तथा यह पता लगते ही कि वह लड़की नाना साहब की पुत्री है, उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने तत्काल उसे हिरासत में लेने का हुक्म दिया। मैना अभी कुछ समय वहां बैठकर और रोना चाहती थी। उसने इस हेतु प्रार्थना भी की किन्तु वज्र हृदय अउटरम ने उसकी एक न सुनी, यहां तक कि उसे रोने की भी अनुमति न मिली। दूसरी ओर कर्नल हे उसे हिरासत में लेने के पक्ष में नहीं था। परिणाम स्वरूप दोनों में वाद-विवाद होने लगा। इस का लाभ उठाते हुए एक क्षण भी गंवाये बिना मैना देवी ऐसी लोप हुई कि फिर ढूँढ़ने पर भी उनके हाथ न लगी। जब कि सर टामस हे का इस कारण अंग्रेजों में मजाक उड़ाया जाने लगा कि वह मैना को प्रेम करता है।

इस घटना को हुए बीसियों दिन बीत गए। एक चांदनी रात को नाना साहब के महल के खण्डहरों पर एक बालिका को रोते हुए पकड़ लिया गया। आज इस वीर बालिका की आवाज में जोश था तथा वह वीरता से बोली कि हाँ, अब आप मुझे चाहे जहां ले जा सकते हैं। मैं अपने प्यारे घर के इस अवशेष पर जितना रोना चाहती थी रो चुकी हूँ। यह मुझे बहुत प्यारा था। इसके लिए मुझे दिल भर कर रोना था। अब मेरा हृदय हल्का है।

यहां से सितम्बर 1857 में उसे पकड़ कर अउटरम ने कानपुर के एक किले में बन्द कर कड़ा पहरा बैठा दिया। एक दिन कठोर हृदय अउटरम ने बिना किसी केस, दलील के तथा कानून की धज्जियां उड़ाते हुए मैना को जिन्दा जला डालने की सजा का आदेश दे डाला। इस क्रूर आदेश से विचलित महाराष्ट्र के एक समाचार पत्र " थारूर" ने इस समाचार को अपने समाचार को अपने समाचार के माध्यम से प्रसारित करते हुए विश्व को इन शब्दों में इस क्रूर निर्णय से अवगत किया "नाना साहब की एक मात्र कन्या मैना को धधकती आग में जिन्दा जला दिया गया। अग्नि की लपटों में उस शान्त और सरल मूर्ति को जलती देखकर श्रद्धा से लोगों ने उसे नमस्कार किया।

इस प्रकार भारत में अंग्रेजी राज्य का यह एक कलंकित पृष्ठ तथा भारतीय वीरांगनाओं की गौरव गाथा का स्वर्णिम पृष्ठ भारतीयों के लिए ही नहीं अपितु पूरे विश्व की देवियों को प्रेरणा देते हुए अंग्रेजी साम्राज्य की क्रूरता का परिचय सदा देता रहेगा।

116, मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरियाणा)
चलभाष- 09354845426, 09876427935

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते।

संसार की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद का उद्घोष है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'। वेदों में ही ईश्वर का कथन है 'अहम् भूमिमदामार्याय' भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन के मोह को 'अनार्यजुष्टम्' कहा है। बौद्ध धर्म के सिद्धान्त को चार आर्य सत्य के नाम से जाना जाता है। रामायण एवं महाभारत में सर्वत्र ही आर्य शब्द का प्रयोग हुआ है। हमारे पढ़े जाने वाले संकल्प मंत्र में भी आर्य शब्द का अपभ्रंश आरज शब्द का प्रयोग हुआ है। मुगलकाल में रचित तुलसीदास की रामचरित मानस में आर्य का अपभ्रंश आरज शब्द आया है। "आरतबस सम्मुख भयऊ बिलग न मानहुँ तात। आरज सुत पदकमल बिना बादि जहाँ लगी नात।। एक सिक्ख ग्रंथ 'पंच प्रकाश' में आर्य का अपभ्रंश 'आरज' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'जो तुम सिख हमारे आरज, देहुँ शीश धरम के कारज।।' दिल्ली के प्रसिद्ध बिडला मंदिर में लगाए गये अधिकांश शिलापटों पर 'आर्य' शब्द ही लिखा हुआ है। यहाँ तक कि इसके बगल में अवस्थित हिन्दू महासभा भवन के बरामदे में लगाए गये शिलापट पर इसका नाम 'आर्य सभा मंडप' लिखा हुआ है। इस तरह हमारे सभी प्राचीन-नवीन धर्मग्रंथ एवं इतिहास में आर्य शब्द का ही प्रयोग हुआ है, हिन्दू शब्द का नहीं।

लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि अपने संस्थापक का मान रखने के लिए हिन्दू समाज की एक प्रमुख संस्था आर्य शब्द को स्वीकार न करके हिन्दू शब्द के प्रयोग की जिद पर अड़ी हुई है। इसी संस्था के एक अनुषंगी संस्था ने जब राही मसूम रज़ा द्वारा महाभारत धारावाहिक का डायलॉग लिखे जाने पर जब आपत्ति प्रकट किया तो लेखक ने उनसे प्रश्न किया कि जब आपको इस्लामी भाषा के शब्द 'हिन्दू' पर आपत्ति नहीं है तो फिर हर संभव संस्कृत भाषा के प्रयोग करने पर भी मुझ पर आपत्ति क्यों? इस पर उनकी बोलती बन्द हो गई। उनसे कोई उत्तर देते न बना। आखिर कब तक हम इस विदेशी भाषा के शब्द से चिपककर अपमान सहते रहेंगे, जिसका हमारे ग्रंथों में उल्लेख तक नहीं है। यदि हमें दुनिया में अपमान से बचाना है और गर्व से मस्तक ऊँचा कर जीना है तो निश्चित रूप से हमें निम्न दोहे को अपने व्यवहार में चरितार्थ करना होगा-

'ओ३म् है ईश हमारा, वेद हमारा धर्म।
आर्य है नाम प्यारा, यज्ञ हमारा कर्म।।

इसके अतिरिक्त और उपाय नहीं है- 'नान्यः पंथः विद्यते अयनाय।

सूर्यदेव चौधरी
राँची- 09470587322

शोक सम्वेदना

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, सहारनपुर के मंत्री अवनीश आर्य जी के सुपुत्र सात्विक आर्य (18 वर्ष) का एक दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवगंतात्मा को सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनः शान्ति व धैर्य प्रदान करें।

अनुराग आर्य, प्रधान
आर्य उप प्रतिनिधि सभा, सहारनपुर

thearyasamaj.org

शोक सम्वेदना

मेरी दादी श्रीमती चन्द्रावती (माता-स्व. श्री राधेश्याम आर्य, आर्य समाज, मुसाफिरखाना, अमेठी) का देहावसान लम्बी बीमारी के बाद 16 जनवरी 2014 को हो गया। उनकी अवस्था लगभग 85 वर्ष की थी। समस्त कार्यक्रम वैदिक रीति से कराया गया। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा को सद्गति एवं हम सभी दुखी परिजनों को मनःशान्ति व धैर्य प्रदान करें।

अरूण कुमार आर्य

आर्य समाज, मुसाफिरखाना, अमेठी

उठो देवगण - जगो देवगण

बहिन बेटियाँ, बहु आदि सब ज्योति पर्व मनाके
आके आकर चले गए खुशियों के दीप जलाके
नहि आई तो अपनी लक्ष्मी अपने घर नहि आई
परदेशिन के बैंको में ही बंद रही अनचाही
उसकी भी इच्छा होती है वह अपने घर आए
हम भी तरस रहे मिलने को आशाप्रदीप जलाए
अस्तु देव! प्रबुद्ध जनों, शासनकर्ता और प्रशासक
जन प्रतिनिधि गण, जुम्मेदारों विधिवेत्ता अभिभाषक।।
उठो देवगण! सब मिलजुल के ऐसा मार्ग निकालो
करो कृपा अपनी लक्ष्मी से हम सबको मिलवा दो
सूखे बाग बगीचे सूखी नदियाँ, रूखी सड़कें
अन्तिम साँसे गिनते उद्यम जन गण नित उठ तड़के
समाचार पत्रों, टी.वी. पर लखते आँख गडाये
शायद लक्ष्मी के आने की कोई भनक मिल जाये।
रोते सपने हर्षाएगें हरियाली छायेगी
अंतिम सांसे गिनते उद्यम में रौनक छायेगी
सुनो गौर से हर घर से हर जन मनुहार लगाते
उठो देवगण जगो देवगण एकहि स्वर हैं आते
हर घर से हर कर से है अपनी लक्ष्मी का नाता
देव प्रबोधनी एकादशी पर अस्तु वह देव मनाता।।

दयाशंकर गोयल

1554डी, सुदामा नगर, इंदौर

आर्य समाज शमसाबाद (आगरा) का शताब्दी समारोह

स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित

आर्य समाज शमसाबाद (आगरा) का 100वॉ वार्षिकोत्सव **आश्विन कृष्ण 11, 12, 13 सम्वत् 2071 शुक्रवार, शनिवार, रविवार दिनांक 19, 20, 21 सितम्बर, 2014 को मनाया जायेगा। इस अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान-**

स्वामी विश्वानन्द जी सरस्वती-अधिष्ठाता गुरूकुल दखौला, मथुरा
पं. हरीशंकर जी अग्निहोत्री - आर्य पुरोहित, वैदिक प्रवक्ता
पं. आचार्य प्रेमपाल जी शास्त्री-वैदिक प्रवक्ता
पं. उमेश चन्द्र जी कुलश्रेष्ठ - वैदिक प्रवक्ता
पं. रघुनाथ देव जी आर्य वैदिक भूषण- भजनोपदेशक
पं. राकेश जी आर्य - भजनोपदेशक
श्री सुकान्त जी आर्य - आदि के प्रवचन, उपदेश व भजन आदि होंगे। उत्सव में दिनांक 19 सितम्बर, 2014 को भजन, प्रवचन वेदोपदेश प्रातः 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक, नगर शोभायात्रा दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक, भजन प्रवचन, वेदोपदेश रात्रि 7 बजे से 10 बजे तक तथा दिनांक 20 सितम्बर 2014 को भजन, प्रवचन, वेदापदेश प्रातः 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक, महिला सम्मेलन दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक, भजन, प्रवचन, वेदोपदेश रात्रि 7 बजे से 10 बजे तक एवं दिनांक 21 सितम्बर 2014 को भजन, प्रवचन वेदोपदेश प्रातः 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक, भजन, प्रवचन, वेदोपदेश दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक, प्रवचन व भजन, वेदोपदेश रात्रि 7 बजे से 10 बजे तक होंगे।

आर्य सत्यदेव गुप्त, स्नातक

पृष्ठ-1 का शेष.....

अस्त्रों से उनके प्रत्याक्रमणों को रोकने का उद्योग कर रहे थे।

इसप्रकार प्रत्याक्रमण द्वारा आक्रमणों को रोकते हुए धर्म महारथी 22 अक्टूबर 1874 को प्रयाग से बम्बई पहुँचे, देर से स्वामी जी के पास बम्बई निवासियों के निमंत्रण आ रहे थे, बम्बई के समाज सुधार संबंधी कार्यक्रमों को स्थिर रूप देने के लिए व्यग्र थे इस कारण उनका आग्रह था कि स्वामी जी शीघ्र ही बम्बई पधारें महर्षि दयानन्द जी के भक्त पं. सेवक लाल जी आदि ने पहले से ही काशी शास्त्रार्थ की प्रतियाँ शहर में बाँट कर प्रसिद्ध कर दी थी, स्टेशन पर स्वामी दयानन्द जी का अच्छा स्वागत हुआ। नालुकेश्वर पर एक उत्तम आश्रम में स्वामी जी के निवास का प्रबंध किया गया था। वहां पर प्रतिदिन धर्म चर्चा होने लगी, बम्बई में उन दिनों बल्लभ सम्प्रदाय का विशेष जोर था, स्वामी जी ने उसी का खण्डन आरम्भ किया, क्योंकि स्वामी जी ने बम्बई में उनके आचरण देखें और सुने तो उनके हृदय में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ।

अब तक स्वामी जी के अनुयायियों की संख्या हजारों से अधिक हो चुकी थी सुधरे हुए विचारों के लोग देश भर में फैले हुए थे, वे लोग बिखरे हुए फूलों की भांति इधर उधर बिखरे पड़े थे, उनकी माला तैयार नहीं हुई थी। सबके संगठित न होने से शक्तियां बहुत ही फैली हुई थी उनका कोई केन्द्र नहीं था, इस अभाव को स्वामी जी के शिष्य चिरकाल से अनुभव कर रहे थे। बम्बई में बहुत से आर्य पुरूष स्वामी जी के पास आये और आर्यो का एक संगठन बनाने के विषय में प्रार्थना की, देर तक विचार होता रहा विशेष चिन्ता नाम के विषय में थी, स्वामी जी ने आर्य समाज नाम उपस्थित किया जो आर्य पुरूषों के हृदय के अनुकूल था, स्वामी जी आर्य जाति के सुधारक और रक्षक थे वे आर्यत्व के पोषक और प्रतिनिधि थे, 'आर्य समाज' इस बात को सूचित करता है ये नाम सभी पुरूषों को ठीक जंचा और आर्य समाज बनाने की तैयारियाँ होने लगी।

हरेक समाज को कोई न कोई आधार चाहिए होता है आर्य समाज का मूल वेद है परंतु अभी तक वे अदम्य सागर थे, जिन तक पहुँचना किसी आर्य पुरूष की शक्ति में न था। अभी वह समय नहीं आया था कि वेदों के आधार पर ही आर्य समाज की स्थापना कर दी जाती आधार में रखने के लिए एक ऐसे ग्रंथ की आवश्यकता थी जो लोगों की समझ में आ सके जिसे प्रत्येक आर्य पुरूष आर्य समाज में आने से पूर्व जान सके कि किन किन सिद्धान्तों को मानने वाला पुरूष आर्य समाज में प्रविष्ट हो सकता है। सौभाग्य से इस समय तक ऐसा ग्रंथ भी तैयार हो चुका था जब स्वामी जी अलीगढ़ में प्रचार कर रहे थे तब राजा जयकृष्ण दास जी ने प्रार्थना की थी कि एक ऐसा ग्रंथ प्रकाशित किया जाये जिसमें सब सिद्धान्तों का समावेश हो, स्वामी जी ने उस प्रस्ताव को स्वीकार करके अपने व्याख्यानों का संग्रह कर लिया और यही महाग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" के नाम से प्रकाशित हुआ। इस समय तक सत्यार्थ प्रकाश प्रथम बार प्रकाशित हो चुका था।

समय अनुकूल था परंतु स्वामी जी को शीघ्र ही बम्बई से सूरत जाना था, इससे कुछ समय के लिए आर्य समाज की स्थापना विसमित हो गई। 24 नवम्बर 1874 से ये परामर्श आरम्भ हुआ उस समय लगभग 60 सज्जनों ने सभासद बनने की प्रतिज्ञा की थी।

तीन मास के लगभग गुजरात में प्रचार करने के बाद जब जनवरी में स्वामी जी बम्बई लौटे तब आर्य समाज की स्थापना का प्रस्ताव और अधिक उत्साह से उठाया गया। इस बार यत्न शीघ्र ही सफल हो गया। तब राजमान्य राजश्री पाना चन्द्र आनन्द जी सर्व सम्मति से नियमों का मसविदा बनाने के लिए नियत किये गये, उनके बनाये मसविदे पर विचार करके चैत सुदी 5 संवत् 1932 तद्नुसार 10 अप्रैल 1875 के दिन चिरगाँव में 28 नियम बनाये गये उसके बाद 10 नियम लाहौर में बाद में बनाये गये। शुरू के 28 नियमों में सभी कुछ है, उद्देश्य नियम, उप नियम आदि सब कुछ उनमें आ गया था। पहला अवसर था जब स्वामी दयानन्द जी महाराज जिन सिद्धान्तों का प्रचार करना चाहते थे उनके मानने वाले लोग एक सूत्र में पिरो कर संगठित हुए, आर्य समाज की नींव में कौन कौन से विचार कार्य कर रहे हैं, ये जानना हो तो इन प्रारम्भिक 28 नियमों का विवेचन आवश्यक है।

ग्राम-पोस्ट-सिठौली इस्ला.

जनपद-बदायूँ

शोक समाचार

3 अगस्त 2014 को आर्य समाज यमलार्जुनपुर के लेखा निरीक्षक श्री लल्लू प्रसाद आर्य (पूर्व प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय) का निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे, उनके निधन से आर्य समाज यमलार्जुनपुर की अपूर्णनीय क्षति हुई है। उनकी अंत्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न करायी गयी। अंत्येष्टि में आर्य समाज के अधिकारियों के अतिरिक्त सैकड़ो की संख्या में लोगों ने उन्हें अश्रुपूर्ण नेत्रों से अंतिम विदाई दी। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवंगात्मा को सद्गति एवं दुखी परिजनों को धैर्य व मनः शान्ति प्रदान करें।

धर्मवीर आर्य

thearyasamaj.org

इस विलासिता के माहौल में यशोदा बेन है एक तपस्विनी पतिव्रता

मेरा प्यारा देश भारत का इतिहास पतिव्रता माताओं से भरा पड़ा है। इस देश में एक नहीं, दो नहीं, सैकड़ो नहीं, सहस्त्रों पतिव्रतायें हुई हैं जिन्होने अपने दुख सुख का ध्यान कम रखते हुए अपने पति के दुख-सुख का अधिक ध्यान रखा और अपने गृहस्थ को सुचारू रूप से चलाते हुए पति की सेवा में अत्यधिक ध्यान रख कर केवल अपने परिवार का ही गौरव नहीं बढ़ाया बल्कि अपने समाज व राष्ट्र का गौरव भी बढ़ाया। उनका जीवन इतना उत्तम पवित्र होता था जिसकी धवल कीर्ति इतनी अधिक बिखरी हुई रहती थी जिसकी उपमा के लिए चन्द्रमा भी फीका पड़ जाता था।

सतयुग व त्रेतायुग में मुख्य मुख्य पतिव्रताओं में माता सीता, सावित्री, अनुसुइया, दमयन्ती, तारा, मन्दोदरी, सुलोचना, उर्मिला के नाम विशेष रूप से लिये जाते हैं। द्वापर में माता गान्धारी जिसका पति धृतराष्ट्र अंधा था, उसने यह सोचकर कि जब मेरा पति ही अंधा है तो मुझे देखने का कोई अधिकार नहीं। इसीलिए उसने अपने भी आंखों पर जीवन भर पट्टी बांधे रखी। और पति की पूरी सेवा करते हुए गृहस्थ को सुचारू रूप से चलाया।

कलयुग में एक महान क्रांतिकारी भाई बालमुकुन्द जो भाई परमानन्द के चचेरे भाई थे उन्हें सन् 1912 में हुए लार्ड हार्डिंग वायसराय पर चांदनी चौक दिल्ली में हुए बम काण्ड में दोषी के रूप में पकड़ा गया और जेल में बंद कर दिया गया। उसकी धर्म पत्नी जो सच्ची पतिव्रता थी उसका नाम राम रखी था वह एक दिन अपने पति से जेल में मिलने गई। उस समय भाई बालमुकुन्द रोटी खा रहे थे। पत्नी ने पूछा रोटी कैसी है तब पति ने कहा आधी मिट्टी मिली हुई कच्ची व सूखी रोटी है। रामरखी को बड़ा दुख हुआ और उसने वहीं प्रतिज्ञा की कि अब मैं भी ऐसी ही रोटी खाऊँगी। जब मेरा पति ऐसी रोटी खाता है तो अच्छी रोटी खाना मेरा धर्म नहीं है। और घर पर आते ही रामरखी वैसी ही रोटी बनाकर खाने लगी। फिर जब दुबारा अपने पति से मिलने गई तो उसका पति एक छोटी कोठरी में अंधेरे में मच्छरों के बीच सोया हुआ था। उसने जब अपने पति की इस दुर्दशा को देखा तो उसे बड़ा दुख हुआ और अपने निश्चय के अनुसार घर पर आते ही अपने घर से कुछ दूर एक छोटी कोठरी बनाकर उसी में अंधेरे में मच्छरों के बीच सोने लगी। सन् 1915 में जब भाई बालमुकुन्द को उनके तीन महान क्रांतिकारी साथियों के जिनके नाम थे मास्टर अमीर चन्द, श्री अवध बिहारी तथा श्री बसन्त विश्वास के साथ फाँसी हो गयी, तब उसने भी खाना-पीना छोड़ दिया और कुछ दिनों बाद वह भी उस महान क्रान्तिकारी की महान पतिव्रता धर्मपत्नी इस नश्वर शरीर को छोड़कर मोक्षधाम को सिधार गई।

अब मैं एक ऐसी पतिव्रता कुशल गृहणी का परिचय दूँगा जिसको बहुत कम लोग जानते हैं, जिसने अपने व्यवहार से एक बिगडैल पति को एक महान देशभक्त व सच्चा सन्यासी बना दिया। यह पतिव्रता नारी है स्वामी श्रद्धानन्द की धर्मपत्नी जिसका नाम है "शिवा देवी" और पति का बचपन का नाम था मुंशी राम। मुंशी राम एक कोतवाल का लड़का होने से छोटेपन में ही बुरी संगत में पड़ गया था, वह अपने साथियों के साथ गंदे स्थानों पर जाकर रात्री के दो बजे घर आता था। उसकी पत्नी दो बजे तक उसकी राह देखती रहती थी और जब मुंशीराम शराब पीकर बेहोशी की हालत में घर आता तो आते ही उल्टी करना आरम्भ कर देता था तब उसकी पत्नी शिवा देवी पानी से उसके गंदे कपड़े साफ करती और उसका मुंह साफ करके पंखा झुला कर सुला देती थी। एक दिन ऐसे ही मुंशीराम घर पर आया और उसकी पत्नी ने उसके कपड़े व मुंह साफ करके उसे सुला दिया और पंखा करने लगी। एक घंटे बाद उसने आंख खोली और भोजन मांगा। पत्नी उसे अच्छी तरह भोजन कराने लगी, भोजन करते समय मुंशीराम ने अपनी पत्नी से पूछा कि हे शिवे तुमने तो भोजन कर लिया होगा। तब पत्नी ने कहा "पतिदेव मैं आपसे पहले भोजन कैसे कर सकती हूँ। जैसे ही देवी ने यह कहा कि मुंशीराम का हृदय पिघल गया और आंखों से प्रायश्चित की धारा बह निकली और बोला- देवी मैं बड़ा अन्यायी हूँ, तुम भूखी रहती हो, यह मुझे पता भी नहीं था। आज से मैं सभी बुरी आदतें छोड़ता हूँ और आगे हम दोनों साथ साथ भोजन किया करेंगे।

यही मुंशीराम बाद में महात्मा मुंशीराम बना और फिर देश का महान क्रान्तिकारी सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द बना जिसने 2 मार्च 1902 को हरिद्वार के समीप गंगा के तट पर वीरान जंगल में गुरूकुल कांगड़ी खोला। जिसमें सैकड़ो स्नातक पढ़ कर देश व समाज की सेवा की। पन्द्रह साल गुरूकुल गांगडी की तन, मन, धन से सेवा करके 10 अप्रैल 1917 में सन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बना। 30 मार्च सन् 1919 को दिल्ली के चांदनी चौक बाजार में रोलट एक्ट के खिलाफ एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए गोरों की सेना के सामने छाती खोलकर गोली मारने को कहा। अंग्रेजी सेना ने अपनी बंदूक नीचे कर ली और जुलूस आगे बढ़ गया। सन् 1919 में जलियांवाला बाग काण्ड से पंजाब में बड़ा भय बैठा हुआ था। ऐसी स्थिति में कांग्रेस ने अमृतसर में अधिवेशन करने का विचार कर लिया। स्वामी श्रद्धानन्द ने इस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनकर अधिवेशन को सफल बनाया, जिसकी प्रशंसा सभी कांग्रेसियों ने की। मुस्लिम नव युवकों के आग्रह पर 4 अप्रैल 1925 को जामा मस्जिद की मीनार पर बैठ कर वेद मंत्र का पाठ कर हिन्दू मुस्लिम एकता का संदेश दिया। फिर गांधी जी की तुष्टिकरण की नीति से नाराज होकर कांग्रेस छोड़ दी और शुद्धि का काम करने लगे। शुद्धि के काम से कुछ मुस्लिम भाई नाराज भी हो गये और 23 दिसम्बर 1926 को एक धर्मान्ध मुस्लिम नवयुवक जिसका नाम अब्दुल रसीद था उसने गोली मारकर स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी। स्वामी जी ने अपनी जीवनी "कल्याण पथ का पथिक" में स्वयं लिखा है कि मेरे जीवन को सुधारने में पहला हाथ स्वामी दयानन्द व दूसरा हाथ मेरी धर्मपत्नी "शिवा देवी" का है। मैं इन दोनों का सदा ऋणी रहूँगा।

अब मैं एक ऐसी परम् त्यागी, तपस्वनी, सच्ची पतिव्रता की चर्चा करूँगा जिसका नाम यशोदा बेन है और अपने देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की धर्म पत्नी है। इनका त्याग, संतोष, धैर्य तथा पत्नीव्रत धर्म के प्रति समर्पित भाव केवल सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। समाचारों के अनुसार ऐसा जान पड़ता है कि इनका कभी भी अपने पति नरेन्द्र मोदी के साथ रहना-सहना नहीं हुआ। मोदी जी बचपन से ही वैरागी स्वभाव के पक्के व राष्ट्रवादी व्यक्ति थे। मोदी जी कई मठो व मन्दिरों में जाकर साधु बनने की भी कोशिश की है और हिमालय की तराईयों में भी साधु संतों के दर्शनों के लिए काफी दिनों तक घूमें परंतु संयोग नहीं बैठा। फिर मोदी जी आर.एस.एस. से जुड़ गये और उसी में अधिकतर समय बिताने लगे, बाद में राजनीति में आ गये, और बारह वर्ष तक गुजरात के सफल मुख्यमंत्री बने रहकर अब देश के प्रधानमंत्री बने हुए है और देश को नई दिशा देने का केवल भरसक प्रयत्न ही नहीं कर रहे बल्कि निश्चित ही देश की उन्नति व विकास करेंगे जिससे विश्व की सबसे बड़ी शक्ति बनाकर देश के गौरव व सम्मान को बढ़ायेंगे। ऐसा सभी देशवासियों की आशा है।

यह प्रसन्नता की बात है कि यशोदा बेन को गृहस्थ का सुख न मिलने पर भी वह अपने आप को मोदी जी की धर्मपत्नी बनी रहने में ही अपना गौरव समझती है और उसकी खुशी और दीर्घायु के लिए हर किस्म का प्रयत्न यानी उपवास, तीर्थ यात्रा आदि करती रहती है। इससे बढ़ कर ओर कौन पतिव्रता हो सकती है जो गृहस्थ के सुख की कामना न रखते हुए भी अपने पति में पूर्ण श्रद्धा का भाव रखती हो और उसके सुखी जीवन की अभिलाषा रखती हो। मैं ऐसी त्यागी, तपस्विनी और मोदी जी के प्रति समर्पित भाव रखने वाली यशोदा बेन का अपने हृदय से स्वागत करता हूँ और इस तपस्विनी को नमन करते हुए मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

खुशहान चन्द आर्य
कोलकता

लेखकों से विनम्र निवेदन

सभी विद्वान लेखकों से विनम्र निवेदन है कि वह अपनी रचनायें (लेख व गीत आदि) हमें नियमित रूप से भेजने की कृपा करते रहें। ताकि उनके प्रकाशन से जन सामान्य लाभान्वित होता रहें।

सम्पादक

thearyasamaj.org

आर्य समाज जागृति विहार का 25वाँ स्थापना दिवस मनाया गया

अब से लगभग ढाई दशक पूर्व मेरठ महानगर में अवस्थित कालोनी जागृति विहार में आर्य समाज का संगठन बनाया गया था। उस समय आर्य समाज का अपना कोई भवन नहीं था। रविवासरीय सत्संगों एवं एक दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन प्रायः सदस्यों के घरों में होता था। तीन चार दिवसीय कार्यक्रम या बड़े आयोजन प्रायः किसी पार्क या विद्यालय में होते थे। वेद प्रचार की यह विधि लगभग बीस-बाईस वर्ष तक सफलतापूर्वक चलती रही। तथापि अपने भवन का न होना खटकता था।

अब पिछले दो तीन वर्षो से आर्य समाज अपने भवन में कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस वर्ष जागृति विहार आर्य समाज ने अपना 25वां स्थापना दिवस रविवार 3 अगस्त 2014 को बहुत उत्साह पूर्वक मनाया। कार्यक्रम प्रातः 8:00 बजे ओ3म ध्वजारोहण के साथ आरम्भ हुआ। ध्वजारोहण करने वाले श्री डा. रामावतार सिंघल, प्रधान, आर्य समाज एवं उनकी टीम के सदस्यों को इस भवन के निर्माण का श्रेय जाता है।

देवयज्ञ श्री पं. रणधीर जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उसके बाद आर्य भजनोपदेशक श्री सत्यदेव जी स्नातक ने समाज में फैली कुरीतियों और पाखण्ड पर प्रहार करते हुए सुमधुर भजनों की गंगा प्रवाहित की। इस बीच उन दानी जनों को सम्मानित किया गया जिन्होंने भवन निर्माण के कार्य में उदारता पूर्वक सहयोग किया है। इसके उपरान्त स्वामी चन्द्र देव जी ने आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए मानव को सुखी जीवन जीने की राह बताते हुए दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया।

मुख्य वक्ता के रूप में आर्य समाज के प्रतिष्ठित लेखक, वक्ता एवं विद्वान श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य आमंत्रित थे। उन्होंने आर्यो एवं आर्य समाज की प्रारंभिक समय की उच्च स्तरीय प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता, आर्थिक और चारित्रिक शुचिता, आर्य विद्वानों के त्याग, तप एवं वैदुष्य का स्मरण कराया। स्वाधीनता संग्राम में योगदान, जाति सेवा के आन्दोलनों में सहभागिता, शिक्षा के प्रसार, पाखण्ड-कुरीतियों के खण्डन एवं दुर्गुणों -दुर्व्यसनों के निराकरण में आर्य समाज की महती भूमिका पर चर्चा की। इस बात पर खेद भी जताया कि आर्यो की संख्या एवं उनके गुणों में ह्रास हुआ है। वेद मंत्रों के हवाले से आर्य-अनार्य के भेद पर भी प्रकाश डाला। यह भी स्पष्ट किया कि स्वयं को आर्य बनायें बिना हम दूसरों को आर्य नहीं बना सकेंगे, कविरत्न पं. प्रकाश जी की लिखी पंक्तियों के साथ "फहरायें ध्वजा ओ3म् की संसार में प्रकाश, हो हार असुर दल की, आर्यो की जीत हो।" उन्होंने अपना वक्तव्य समाप्त किया। विशिष्ट अतिथि डा. वेदपाल आर्य जी (पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष जनता वैदिक महाविद्यालय, बडौत) ने आर्य समाज के नियमों की व्याख्या करते हुये समाज को एक सूत्र में बांधने की प्रेरणा दी। कार्यक्रमों में श्रोताओं की उपस्थिति उत्साहजनक रही। आयोजन अत्यन्त सफल रहा।

रामसिंह आर्य
मंत्री, आर्य समाज जागृति विहार, मेरठ

सहारनपुर दंगा मानवता पर कलंक

उ.प्र. आर्य युवा परिषद, उ.प्र. की जनजागरण मंच व सार्वदेशिक आर्य मित्र क्लब की ओर से आयोजित संयुक्त बैठक में सहारनपुर में हुये दंगे, हिंसा, लूटपाट व आगजनी को मानवता के लिए कलंक और गुरूद्वारा में न्यायालय के फैसले को लागू कराने में प्रशासनिक अफसरों की घोर चूक और लापरवाही बताया गया। अमानुषी कृत्य की घोर निंदा की गयी।

रामबाण रोड स्थित आर्य भवन पर बैठक में कई संगठनों से जुड़े पदाधिकारी डा. वीरसिंह भावुक ने अफवाह फैलाने वाले खुराफातियों की सूचना पुलिस व प्रशासन को देकर सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि धर्म, मजहब, जाति और सम्प्रदाय के नाम पर हिंसा फैलाने वाले स्वार्थी लोग समाज के दुश्मन है। सामाजिक एकता व सौहार्द बनाये रखना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है, चूँकि मनुष्य का मनुष्य बने रहना सबसे पहला धर्म है। उन्होंने कहा कि सदा शान्ति और भाईचारे की मिसाल रहे सहारनपुर की यह घटना बड़ी ही दुःखदायी है जो एक गहरी साजिश का हिस्सा है, जांच में सब कुछ सामने आ रहा है। बैठक में अमन व शान्ति के लिए ईश प्रार्थना व शान्ति पाठ हुआ।

वीर सिंह भावुक

शोक समाचार

आर्य समाज शहर झांसी के यशस्वी मंत्री श्री कृष्ण गोपाल झा का दुखद निधन दिनांक 29 अगस्त 2014 को सड़क दुर्घटना में हो गया। आप नित्य की भांति अपने निवास स्थान पर दैनिक यज्ञ करने के पश्चात आर्य समाज शहर के दैनिक यज्ञ सत्संग में प्रातःकाल सम्मिलित हुए। झांसी के प्रसिद्ध आर्य समाजी लाला बोधराज साहनी के पौत्र तथा श्री रविन्द्र साहनी के पुत्र स्व. श्री कपिल साहनी की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न कराने हेतु आप अपने स्कूटर से चले। रास्तें में सड़क पर एक गाय को बचाने के चक्कर में आपका स्कूटर डिवाइडर से टकरा गया और उसी स्थान पर आपकी अकाल मृत्यु हो गयी।

श्री कृष्ण गोपाल झा की अंत्येष्टि उनाव गेट बाहर झांसी पर पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुई। श्री कृष्ण गोपाल झांसी निवास की आपकी 60 वर्ष की अवधि में आर्य समाज शहर से जुड़े रहे। आप इस आर्य समाज के विभिन्न पदों पर समय समय पर रहे। वर्तमान में आप अनेक वर्षो से निरन्तर आर्य समाज शहर के मंत्री पद पर थे।

आपके सफल संचालन में आर्य समाज की चतुर्मुखी प्रगति हुई। अनेक वर्षो से आर्य समाज में दैनिक यज्ञ सत्संग हो रहा है। वर्ष में दो विशेष प्रचार तथा वेद पारायण यज्ञ आश्विन के मास तथा जनवरी में वृहद यज्ञ उत्सव का आयोजन आपके ही संयोजकत्व में ही होते थे। आर्य समाज मंदिर में दैनिक होम्यो औषधालय का संचालन गत अनेक वर्षो से हो रहा है, जिससे वर्ष में लगभग तीस हजार से अधिक लोग लाभान्वित होते हैं।

श्री कृष्ण गोपाल झा सफल पुरोहित भी थे। क्षेत्र में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण झांसी नगर व जिले में आप वैदिक संस्कार कराते थे। आप अनेक सामाजिक और शैक्षिक संस्थाओं से भी जुड़े रहे तथा तन मन धन से इन संस्थाओं को पोषित करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

01 सितम्बर 2014 को आर्य समाज शहर -झांसी में आपकी पुण्य स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें झांसी नगर व जिले की सभी लगभग 40 आर्य समाजों एवं अनेक सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने उन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित कर शोक व्यक्त किया।

श्री कृष्ण गोपाल झा के आकस्मिक निधन से जो रिक्तता झांसी आर्य जगत में हुई है उसकी पूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं है। परम पिता परमात्मा उन्हें तथा परिजनों को मनः शान्ति व धैर्य प्रदान करें।

वेदारी लाल आर्य
झांसी

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

10 अगस्त 2014 से आर्य समाज यमलार्जुनपुर कैसरगंज बहराइच के तत्वावधान में श्रावणी पर्व से कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमें दूर दराज के गांवों में चल कर यज्ञ करवाया, महर्षि दयानन्द के संदेश को प्रवचन के माध्यम से जन जन में पहुँचाया गया। भारी संख्या में श्रोताओं ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया।

धर्मवीर आर्य
प्रधान

thearyasamaj.org

मंत्र गीत ''त्रय विजय-वाहिनी- (प्रथम)

तन में त्रिसन्धियाँ सजाओ।
जग में विजय तभी तुम पाओ।।
बाहर तुमने शत्रु हराये।
उनके राज्य जीत कर लाये।।
तन का राज सुराज बने बिन
धन का राज्य नहीं रह पाये।
अपनी जीत इंद्रियां लाओ।
जग में विजय तभी तुम पाओ।।1।।
सब देव विजय अभिलाषी हैं।
यम-नियमों के अभ्यासी हैं।
वे तन से, मन से, मेघा से
तन-मन मेघा के शासी हैं
त्रेत केत अभिप्रेत बनाओ।
जग में विजय तभी तुम पाओ।।2।।
थल की, जल की, नभ की सेना।
पृथक-पृथक ये कहीं लड़े ना।
रहें समन्वय पूर्ण नियंत्रण,
हो स्वदेश की दूर विजय ना।
नैतिक बल आदर्श बढ़ाओ।
जग में विजय तभी तुम पाओ।।3।।
सविनय खाते यज्ञशेष जो।
निशिदिन पाते बल विशेष वो।
काम-क्रोध वासना वाहिनी,
वही जीतते अभिनिवेश को।
अपने अवगुण क्लेश हटाओ।
जग में विजय तभी तुम पाओ।।4।।
अपने रखो सनातन प्रण को।
सुर जीतें असुरों से रण को।
सैन्य गयी जुड़ देह देश की,
आहुति बनती विजय वरण को।
बलिदानी अब यज्ञ रचाओ।
जग में विजय तभी तुम पाओ।।5।।

त्रय विजय वाहिनी (द्वितीय)

बाहर बल विजय बड़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।
तुम देश जीत कर आये हो।
पर देह जीत ना पाये हो।
काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह से,
तुम घड़ी घड़ी घबड़ाये हो।
इनकी हो रही चढ़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई हैं।।1।।
प्रभुवर ने दी तीन संन्धियां दीं
इनके प्रयोग की विधियाँ दी
दृढ़ देह-हृदय मस्तिष्क सन्धि
अंगों में भर कर निधियाँ दीं।
इनमें आई अंकडाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।2।।
थल-जल-नभ की त्रय सेनायें।
देह-हृदय सिर की महिमायें।
यदि यही परस्पर लड़ पड़तीं
कर्म-भावना ज्ञान गिरायें।
मिट जाती तब तगड़ाई है
अन्दर चल रही लड़ाई हैं।।3।।
जो यज्ञ शेष आहारी हैं।
प्रभु को अर्पित अविकारी हैं।
आहुति सेवी जयशील देव,
त्रय सैन्य शक्ति संचारी हैं।
उनकी विजयी अंगड़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।4।।
अपने याद पूर्वज कर लो।
उनकी हृदय प्रतिज्ञा धर लो।
वे रहे हराते असुरों को,
उनकी प्रिय आहुतियाँ वर लो।
श्रुति की यह प्रौढ़ पढ़ाई है।
अन्दर चल रही लड़ाई है।।5।।

स्रोत्र- सर्वे देवा अत्यायन्ति ये अश्नन्ति वषट्कृतम्।
इमां जुषध्वमाहुति मितो जयत मामुंतः।।
सर्वे देवा अत्यायन्तु त्रिषंधेराहुतः प्रिया।
संघां महत रक्षत ययाग्रे असुरा जितः।।
(अथर्व 11.10-15)

देवातिथि देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम), रामघाट मार्ग, अलीगढ़।

श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार

आर्य समाज बडगांव स्व. संग्राम सेनानी लाला छोटेलाल का अहाता स्टेशन रोड, गोण्डा में लाला छोटे लाल मेमोरियल ट्रस्ट गोण्डा के सहयोग से दिनांक 17 से 19 अगस्त तक श्रावणी पर्व वं वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिदिन प्रातः 8 से 10 बजे तक देव यज्ञ एवं वेद संदेश हुए।

17 को प्रातः नगर कीर्तन एवं सामूहिक प्रचार भ्रमण एवं मध्यान्ह ध्वजारोहण तथा वैदिक राष्ट्रगान हुआ। 18 तारीख को अपरान्ह आर्य विद्वानों की विचार गोष्ठी हुई। 19 तारीख को अपरान्ह शंका समाधान, कार्यकर्ता सम्मेलन एवं युवाओं और छात्रों को मार्गदर्शन दिया गया तथा रात्रि में भण्डारे के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

वेद ज्ञान विज्ञान के अक्षय भंडार

काशी आर्य समाज बुलानाला के तत्वावधान में आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत रविवार को प्रातः श्रावणी उपाकर्म तथा रक्षाबंधन पर्व आर्य समाज के प्रधान श्री नाथ सिंह पटेल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, सर्वप्रथम डा. गायत्री आर्य, पं. ज्ञान प्रकाश आर्य तथा मोती लाल आर्य के पौरोहित्य में वृहद वैदिक यज्ञ स्वस्तिवाचन के मंत्रों तथा यजुर्वेद के पारायण के साथ सम्पन्न हुआ, यजमान डा. विशाल सिंह-कोषाध्यक्ष तथा श्री लाल चन्द्र आर्य-अन्तरंग सदस्य तथा रमेश जी आर्य थे। अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री नाथ सिंह पटेल ने कहा कि हमारे ऋषि-महर्षियों के साथ साथ अब यूरोपीय विद्वानों ने भी वेदों को ज्ञान का अक्षय भंडार बतलाया है इसीलि स्वामी दयानन्द ने सारी दुनिया को वेदों की ओर लौटने का पैगाम दिया था।

काशी आर्य बुलानाला परिषद के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि रक्षाबंधन पर्व भाई-बहनों के परस्पर स्नेह का पर्व है। आर्यो का कर्तव्य है कि वह नारी जाति के सम्मान की रक्षा का संकल्प लेवें।

आर्य विदुषी डा. गायत्री आर्य-मात्मंदिर कन्या गुरूकुल ने बतलाया कि वेद-वेदांग, उपनिषदों तथा ब्राह्मण ग्रंथों सहित सभी प्राच्य ज्ञान विज्ञान का पढ़ना-पढ़ाना एवं सुनना सुनाना ही चातुर्मास तथा वेद प्रचार सप्ताह का प्रयोजन है।

यज्ञोपरांत श्री रमेश जी आर्य, विभा आर्य तथा हेमा आर्य व मोती लाल आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन प्रकाश नारायण शास्त्री तथा धन्यवाद प्रकाश डा. विशाल सिंह ने किया।

श्री नाथ सिंह पटेल, प्रधान

दान की अपील

आर्य समाज कान्धरपुर, नोनहरा, गाजीपुर का भवन जून माह में आयी आँधी तूफान में पूरा ही क्षतिग्रस्त हो गया है, यहाँ पर बैठने योग्य भी जगह नहीं है, जो दीवारें बची है उसे भी गिराकर नये सिरे से एक यज्ञशाला, एक अतिथिशाला एवं एक कार्यालय का निर्माण कराना अति आवश्यक है किंतु यह कार्य केवल अकेले बल पर यह समाज कराने में सक्षम नहीं है। अतः आर्य समाज देश भर के सभी आर्य समाजों एवं आर्यबंधुओं से सहायता की अपील करती है। यह दान/सहायता निम्न पते पर दी जा सकती है-

प्रधान - रामवृक्ष सिंह कुशवाहा
आर्य समाज कन्हरापुर, नोनहरा, गाजीपुर, उ.प्र.
पिन कोड-233 303, मो. नम्बर- 9451135346
चेक/ड्राफ्ट-आर्य समाज कन्हरापुर देय भारतीय स्टेट बैंक शाखा फतेहपुर अरवां, कोड नंबर-8225, गाजीपुर, उ.प्र.

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४५६८११५१६, मंत्री-०६६१६२६७६६६, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com १

सेवा में,

.....

.....

.....

स्वास्थ्य-चर्चा

एलर्जी : कारण, लक्षण एवं उपचार

एलर्जी या अति संवेदनशीलता आज की लाइफ में बहुत तेजी से बढ़ती हुई सेहत की बड़ी परेशानी है। कभी कभी एलर्जी गंभीर परेशानी का भी सबब बन जाती है जब हमारा शरीर किसी पदार्थ के प्रति अति संवेदनशीलता दर्शाता है तो इसे एलर्जी कहा जाता है और जिस पदार्थ के प्रति प्रतिक्रिया दर्शाई जाती है उसे एलर्जन कहा जाता है।

एलर्जी के कारण- एलर्जी किसी भी पदार्थ से मौसम के बदलाव से या आनुवंशिकता जन्य हो सकती है। एलर्जी के कारणों में धूल, धुआँ, मिट्टी, परागकण, पालतू या अन्य जानवरों के संपर्क में आने से, सौंदर्य प्रसाधनों से, कीड़े, बर्रे आदि के काटने से, खाद्य पदार्थो से एवं कुछ अंग्रेजी दवाओं के उपयोग से एलर्जी हो सकती है सामान्यतया एलर्जी नाक, आँख, श्वसन-प्रणाली, त्वचा व खान-पान से संबंधित होती है किंतु कभी कभी पूरे शरीर में एक साथ भी हो सकती है जो कि गंभीर हो सकती है।

स्थानानुसार एलर्जी के कारण-

नाक की एलर्जी- नाक में खुजली होना, छींके आना, नाक बहना, नाक बंद होना, या बार-बार जुकाम होना आदि।

आँख की एलर्जी-आँखों में लालिमा, पानी आना, जलन होना, खुजली आदि।

श्वसन संस्थान की एलर्जी-इसमें खांसी, साँस लेने में तकलीफ एवं अस्थमा जैसी गंभीर समस्या हो सकती है।

त्वचा की एलर्जी- एलर्जी काफी कॉमन है और बारिश का मौसम त्वचा की एलर्ज़ी के लिए बहुत ज्यादा मुफीद है, त्वचा की एलर्जी में त्वचा या खुजली होना, दाने निकलना, एक्जिमा, पित्ती उछलना आदि होता है।

खान-पान से एलर्जी- बहुत से लोगों को खाने-पीने की चीजों जैसे-दूध, अंडे, मछली, चॉकलेट आदि से एलर्जी होती है।

सम्पूर्ण शरीर को एलर्जी- कभी कभी कुछ लोगों में एलर्जी में गंभीर स्थितियां उत्पन्न हो जाती है और सारे शरीर में एक साथ गंभीर लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं ऐसी स्थिति में तुरंत हॉस्पिटल लेकर जाना चाहिए।

अंग्रेजी दवाओं से एलर्जी- कई अंग्रेजी दवाएं भी एलर्जी का सबब बन जाती है जैसे पेनसिलीन का इंजेक्शन जिसका रिएक्शन बहुत खतरनाक होता है और मौके पर ही मौत हो जाती है। इसके अलावा दर्द की गोलियां, सल्फा ड्रग्स एवं कुछ एंटीबायोटिक दवाएं भी सामान्य से गंभीर एलर्जी के लक्षण उत्पन्न कर सकती है।

मधुमक्खी, ततैया आदि का काटना- इनसे भी कुछ लोगों में सिर्फ त्वचा की सूजन और दर्द की परेशानी होती है, जबकि कुछ लोगों को इमरजेंसी में जाना पड़ जाता है।

एलर्जी से बचाव- एलर्जी से बचाव ही एलर्जी का सर्वोत्तम साधन है, इसलिए एलर्जी से बचने के लिए इन उपायों का पालन करना चाहिए-

यदि आपको एलर्जी है तो सर्वप्रथम यह पता करें कि आपको किन-किन चीजों से एलर्जी है। इसके लिए आप ध्यान से अपने खान-पान और रहन सहन को व्यवस्थित करें।

घर के आस पास गंदगी न होने दें।

घर में अधिक से अधिक खुली और ताजा हवा आने का मार्ग प्रशस्त करें।

जिन खाद्य पदार्थो से एलर्जी है उन्हें न खाये।

एकदम गरम से ठंडे और ठंडे से गरम वातावरण में न जायें।

बाइक चलाते समय मुंह और नाक पर रूमाल बांधे, आंखों पर धूप का अच्छी क्वालिटी का चश्मा पहनें।

गद्दे, रजाई, तकिये के कवर एवं चादर आदि समय समय पर गरम पानी से धोते रहें।

रजाई, कम्बल, गद्दे आदि को समय समय पर धूप दिखाते रहें।

पालतू जानवरों से एलर्जी है तो उन्हें घर में ना रखें।

जिन पौधों के पराग कणों से एलर्जी है उन्हें दूर रखें।

घर में मकड़ी वगैरह के जाले ना लगने दें, समय समय पर सफाई करते रहें।

धूल मिट्टी से बचें, यदि धूल मिट्टी भरे वातावरण में काम करना ही पड़ जाये तो फेस मास्क पहनकर काम करें।

नाक की एलर्जी- जिन लोगों को नाक की एलर्जी बार बार होती है उन्हें सुबह भूखे पेट 1 चम्मच गिलोय और 2 चम्मच आंवले के रस में 1 चम्मच शहद मिलाकर कुछ समय तक लगातार लेना चाहिए, इससे नाक की एलर्जी में आराम आता है, सर्दी में घर पर बनाया हुआ या किसी अच्छी कंपनी का च्यवनप्राश खाना भी नासिका एवं साँस की एलर्जी से बचने में सहायता करता है। आयुर्वेद की दवा सितोपलादि पाउडर वं गिलोय पाउडर को 1-1 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम भूखे पेट शहद के साथ कुछ समय तक लगातार लेना भी नाक एवं श्वसन संस्थान की एलर्जी में बहुत आराम देता है। जिन्हें बार बार त्वचा की एलर्जी होती है उन्हें मार्च अप्रैल में जब नीम के पेड़ पर कच्ची कोपलें आ रही हों उस समय 5-7कोपलें 2-3 कालीमिर्च के साथ अच्छी तरह चबा चबा कर 15-20 रोज तक खाना त्वचा के रोगों से बचाता है। हल्दी से बनी आयुर्वेद की दवा हरिद्रा खंड भी त्वचा के एलर्जी जन्य रोगों में बहुत गुणकारी है। इसे किसी आयुर्वेद चिकित्सक की राय से सेवन कर सकते हैं।

सभी एलर्जी जन्य रोगों में खान-पान और रहन-सहन का बहुत महत्व है इसलिए अपना खान-पान और रहन-सहन ठीक रखते हुए यदि ये उपाय अपनाएंगे तो अवश्य एलर्जी जन्य रोगों से बचे रहेंगे एलर्जी जन्य रोगों में अंग्रेजी दवाएं रोकथाम तो करती है लेकिन बीमारी को जड़ से खत्म नहीं करती है, जबकि आयुर्वेद की दवाएं यदि नियम पूर्वक ली जाती हैं तो रोगों को जड़ से खत्म करने की ताकत रखती हैं।

डॉ. मनोज गुप्ता, गुडगाँव

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन हेतु क्रान्तिकारी योजना

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा ने जन जन में सत्यार्थ प्रकाश पहुँचाने हेतु सत्यार्थ प्रकाश की एक लाख प्रतियाँ छापने का दृढ़ निश्चय किया है। उनका पुनीत लक्ष्य आगामी पांच वर्षो में विश्व के कोने कोने में अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को पहुँचाने का है। ग्रंथ का प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। जिसका पहला संस्करण अक्टूबर मास में ऋषि निर्वाण दिवस पर छपकर आ जायेगा। सभी से अनुरोध है कि वे अधिकाधिक प्रतियां का आर्डर तथा सहयोग राशि अविलम्ब आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या-30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या-88222200014649 में जमा करा सकते हैं और उसकी सूचना फोन द्वारा हमें दे दें ताकि यथा समय आपको रसीद भेंजी जा सकें।

पता- सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि द्वारा डा. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार निकट श्री राम पब्लिक इंटर कालेज, अमरोहा।

फोन- 05922 - 282033,

मोबाइल-09412139333, 09758833783

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।